संवाद

पत्रकारिता, जनसंचार एवं नवमीडिया स्कूल, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला

मई 2019 | चेतना से संवेदना तक | पृष्ठ संख्या: 2

आईआरएस सर्वे 2019:प्रिंट के पाठकों की संख्या 42 करोड़ के पार

अनुज कुमार पाण्डेय

मीडिया रिसर्च यूजर्स कॉउन्सिल द्वारा प्रकाशित भारतीय रीडरशिप सर्वे 2019 (IRS2019) के अनुसार विश्व स्तर पे जहाँ प्रिंट मीडिया पाठकों की संख्यां में गिरावट आयी है ,भारत में पाठकों की संख्यां 42. 5 करोड़ तक पहुंच गयी है। IRS की पहली तिमाही की जारी रिपोर्ट में कहा गया है 2017 के सर्वे के नतीजों के मुकाबले तब से अब तक दैनिक समाचार पत्रों के पाठकों की संख्या में 1.8 करोड़ की वृद्धि हुई है वहीं पत्रिकाओं ने 90 लाख अतिरिक्त पाठक जोड़े हैं। गौरतलब है कि सर्वे के मुताबिक देश के टॉप 10 दैनिक अख़बारों की सूची में हिंदी भाषा अख़बार ही शीर्ष पर हैं | जहाँ दैनिक जागरण 7 करोड़ 36 लाख 73 हज़ार पाठकों के साथ प्रथम स्थान पर है,वहीं 5.14 पाठकों के साथ दैनिक भास्कर दूसरे स्थान पर है| इस सूचि में सिर्फ एक अंग्रेजी भाषा का अख़बार है टाइम्स ऑफ़ इंडिया जिसकी पाठक संख्या 1 करोड़ 52 लाख 36 हज़ार हैं| ये आकड़े पूर्ण रीडरशिप पर आधारित हैं|IRS की रिपोर्ट में यह भी सामने आया कि भारत में इंटरनेट उपभोक्ताओं में भी उछाल आया है और अब भारत में इंटरनेट इस्तेमाल करने वाले 38.4 करोड़ लोग हैं जिसमे से 50 प्रतिशत उपभोक्ता ग्रामीण छेत्रों से हैं|अंग्रेजी भाषा के आम जिंदगी में बढ़ते प्रभाव के बावज़ूद भी हिंदी प्रिंट मीडिया के उपभोक्ता लगातार बढे हैं और भारतीय पाठकों में प्रिंट विश्वनियता के मामले में सफल है| MRUC IRS 2017 के सर्वे के बाद कुछ कारणों की वजह से 2018 में सर्वे नहीं किया गया था,2019 की इस सर्वे में गांवों, शहरों और महानगरों के 3 लाख 24 हजार घरों से लिए गए आंकड़ों का अध्ययन किया गया है|इंडियन रीडरशिप सर्वे (IRS) विश्व का सबसे बड़ा पाठक सर्वे है।इसमें प्रति वर्ष ढाई लाख से अधिक पाठकों का सर्वेक्षण किया जाता है |

धर्मशाला में आयोजित हुआ पुस्तक मेला

शालिनी ठाकुर

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा धर्मशाला के पुलिस मैदान में 27 अप्रैल से 5 मई तक पुस्तक मेले का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के कुलपति डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री ने किया। इस अवसर पर न्यास के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बल्देव भाई शर्मा, हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रत्युष गुलेरी और मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राजभाषा की निर्देशक श्रीमती सुनीति शर्मा भी उपस्थित थी। इस मेले में 40 से अधिक प्रकाशनों ने भाग लिया व बुक स्टॉल लगाए, जिसमे लोगों को देश विदेश के मशहूर लेखकों की पुस्तकें पढ़ने और खरीदने का अवसर मिला। यह मेला प्रतिदिन 11 बजे से शाम 8 बजे तक चलता था। इस मौके पर एनबीटी के पूर्व अध्यक्ष बल्देव भाई शर्मा ने कहा कि बचपन से हम सुनते आएँ हैं कि पुस्तकें व्यक्ति की सच्ची मित्र होती हैं। न्यास द्वारा आयोजित पुस्तक मेलों से देश भर में अनेक तरह की पुस्तकें पुस्तक प्रेमियों तक बड़ी सहजता से पहुंचती है इसीलिए यह पुस्तक मेले देश भर में निरंतर लोकप्रिय हो रहे हैं। पुस्तकों के माध्यम से न केवल हम अपने भविष्य को उन्नत बना सकते

पुस्तक मेले का प्रवेश द्वार

हैं बल्कि जीवन को सही रास्ते पर आगे बढ़ाने की प्रेरणा भी मिलती है| इसलिए आज बच्चों और युवाओं को पुस्तकें पढ़ने के प्रति अपनी उत्सुकता बनाए रखनी चाहिए और माता पिता को अपने बच्चों के जन्मदिन पर एक अच्छी जीवनपयोगी पुस्तक ज़रूर भेंट करनी चाहिए।

नौ दिन तक चले इस मेले में ना सिर्फ किताबें बेची गई बल्कि अन्य कार्यक्रम जैसे काव्यपाठ, ग़ज़ल पाठ, पहाड़ी कविता पाठ, व्यंग्य पाठ का आयोजन भी किया गया।

काव्य पाठ के संचालक सर्वेश कुमार मिश्रा का कहना है कि आने वाले समय में भी धर्मशाला में इस तरह के पुस्तक मेले का आयोजन होते रहना चाहिए। इसके दो लाभ हैं, पहला यह कि इसमें पुस्तकों के प्रसार के साथ संस्कृति का भी प्रसार होता है, दूसरा यह कि पुस्तक प्रेमियों को वो पुस्तकें आसानी से सुलभ हो जाती हैं जो पुस्तकें मुश्किल से मिलती हैं। पुस्तक मेले का जिक्र करते हुए : अगर हम लोगों को ईश्वर की कृति के रूप में देखें तो इतना ही कहूँगा कि जीवन के उद्देश्यों से है अनजान यह दुनिया,चलती-फिरती पुस्तकों की है दुकान यह दुनिया... केंद्रीय विश्वविद्यालय की छात्रा वंशिता वशिष्ठ जो इस मेले में वॉलेंटियर भी रहीं उन्होंने कहा कि यह कहते हुए मुझे बिल्कुल भी झिझक नहीं होगी कि आजकल के दौर में ई-बुक्स ने उत्तर भारत में किताबों की अहमियत को बहुत कम कर दिया है ऐसे में इस मेले का आयोजन कर के एनबीटी ने इसकी अहमियत को वापस लाने के लिए बहुत अच्छा प्रयत्न किया। मैने इस मेले में मीडिया सेंटर हैंडल किया जिसमें मुझे दिन भर के कार्यक्रमों के प्रेस नोट बनाने का काम दिया गया था।

कमजोरी को बनाया अपनी ताकत

जेसिका कॉक्स

स्वाति ठाकुर

दुनिया का पहला लाइसेंस जो किसी आर्मलेस पायलट को दिया गया है वह है जेसिका कॉक्स । ये दुनिया की पहली और इकलौती बिना हाथों वाली पायलट है जो पैरों से प्लेन उड़ाती है । इसी कारण जेसिका का नाम 'गिनीज बुक ऑफ रिकॉडस' में भी दर्ज किया गया है । जेसिका कॉक्स केवल पैरों से प्लेन ही नहीं उड़ाती बल्कि वह पैरों से पियानो तक बजाती है । वह टाइक्वांडो में ब्लैक बेल्ट धारी भी है ।जेसिका कॉक्स का जन्म 2 फरवरी 1983 को अमेरिका में हुआ। इनका जन्म बिना हाथों के साथ हुआ था । जेसिका ने मनोविज्ञान में बैचलरस की डिग्री के साथ - साथ कम्युनिकेशन में भी बैचलरस की है । वह एक सर्टिफाइड स्कूबा गोताखोर भी है। 10 अक्टूबर 2008 में जेसिका को अपना पहला पायलट सर्टिफिकेट मिला। 14 साल की उम्र में ही जेसिका ने इंटरनेशनल ताइक्वांडो फेडरेशन में ब्लैक बेल्ट जीता । ताइक्वांडो में ब्लैक बेल्ट हासिल करने के बावजूद भी जेसिका ने कभी भी ताइक्वांडो का प्रशिक्षण लेना नहीं छोड़ा। उन्होंने विश्वविद्यालय में रहते हुए कोरियाई मार्शल आर्ट में अपना प्रशिक्षण फिर से शुरू किया। उन्होनें कैंपस में अमेरिकन ताइक्वांडो एसोसिएशन क्लब में अपनी दूसरी और तीसरी डिग्री ब्लैक बेल्ट अर्चित की जहां पर शिक्षकों ने उनके लिए एक नया पाठ्यक्रम बनाया ।जेसिका ने 2014 में एरीजोना स्टेट चैंपियन का खिताब हासिल किया और 2008 में व्यापक पायलट प्रशिक्षण और लाइफ सपोर्ट पायलट सर्टिफिकेट भी हासिल किया । जिसके बाद 2011 में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में "फर्स्ट आर्मलेस पायलट इन द वर्ल्ड टू द पायलट लाइसेंस प्राप्त किया " । जेसिका वास्तव में ERCO415 - C ercoupe उडा़ती है । यह एक हल्का खेल विमान है । आज जेसिका एक प्रेरणादायक वक्ता की भूमिका निभा रही है ।वह दुनिया भर में अलग-अलग देशों में यात्रा कर रहीं हैं और लोगों को अपने प्रेरणादायक भाषणों से प्रेरित कर रहीं हैं। जेसिका कॉक्स ने 2015 में एक आटो बायोग्राफिकल सेल्फ हेल्प बुक भी प्रकाशित की , जिसका नाम डिसारम योर लिमिट्स है।

विलुप्ति के कगार पर टंकरी लिपि

उमंग अरोड़ा

अपनी भाषा को खोना किसी भी संस्कृति के लिए बहुत बड़ी क्षति की बात है। भाषा संस्कृति, लोगों, उनके ढंग का प्रतिनिधित्व करती है और उनके पूरे व्यक्तित्व को दर्शाती है। भाषा लोगों को दिल से जोड़ने में मदद करती है तथा व्यक्ति को अपनेपन का दिलासा देती है।

17वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक टांकरी भाषा ने उत्तरी और उत्तर पश्चमी भारत की कई रियासतों की आधिकारिक लिपि के रूप में कार्य किया है। यह चम्बयालि, डोगरी और कई पहाड़ी भाषाओं के लिए पारंपरिक लिपि है। पर टांकरी लिपि आज लुप्त हो चुकी है जिसका प्रमुख कारण यही है कि लोगों ने इसे अपनाना बंद कर दिया है। राज्य भर के सभी निजी स्कूलों में अंग्रेज़ी भाषा का ही चलन है। कई पहाड़ी अख़बार जैसे गिरिराज साप्ताहिक, हिमभारती आदि पहाड़ी भाषा को बढ़ावा दे रहे हैं। टांकरी लिपि, जिसमें पहाड़ी भाषाएँ लिखी जाती हैं ,स्वतंत्रा के बाद से ही विवाद में पड़ गई। तब से उसका पुन: प्रवर्तन नामुमकिन सा रहा है। पंडित हरिकृष्णन मुरारी, रैत निवासी, ने ताउम्र टांकरी के पुन: परिचय पर कार्य किया है।

निशा नेहरिया, सरकारी स्कूल अध्यापिका, जो खुद गद्दी समुदाय से हैं, कहती हैं," टांकरी को पढ़ने की या पढ़ाने की कभी कोशिश ही नहीं की गयी। हमारी पीढ़ी में तो मैंने किसी को नहीं देखा टांकरी पढ़ते हुए। मेरे ससुर जी के पिता ही इसके आखिरी प्रयोगकर्ता थे।आज गद्दियों की कोई भी पुश्त ऐसी नहीं होगी जो टांकरी का प्रयोग करती हो। UNESCO की सूची के अनुसार 40 से अधिक बोलियाँ ऐसी हैं जो विलुप्त होने वाली हैं। उन में से चार बोलियाँ हिमाचल की हैं- बगहटी, हन्दुरी, पंगवाली और सिरमौदी। टांकरी के विलुप्त होने का एक कारण यह भी है कि स्कूलों में इसे न पढ़ाया जाता तथा सरकार द्वारा इसे नज़रअंदाज़ करना।

डॉक्टर पूर्णिमा चौहान, सचिव (भाषा, कला और संस्कृति) का कहना है कि सरकार APURSA योजना के माध्यम से सांस्कृतिक संसाधनों का लाभ उठाने की योजना बना रही है। सरकार ने 'हिमाचल की प्राचीन लिपियाँ ' नमक एक पुस्तिका नामित की। 2018 में चली APURSA(आज पुरानी राहों से) योजना का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर के अनछुए पहलुओं का संरक्षण व सवर्धन करना तथा जनमानस विशेषकर युवाओं एवं पर्यटकों को इसके प्रति जागरूक करना है।

विघटन से पहले खनियारा थी एशिया की सबसे अमीर पंचायत

शुभम शर्मा

कांगड़ा में धर्मशाला के तहत एक गांव खनियारा है जिसकी ग्राम पंचायत कभी अमीरी के मामले में एशिया में प्रथम स्थान पर थी। इस पंचायत के सबसे अमीर बनाने का कारण यहां पर मिलने वाला नीला सोना है। नीला सोना कहा जाने वाला यह पदार्थ खनियारा में स्थित खानों से निकलने वाला स्लेट है।

खनियारा की स्लेट खानों में निर्मित स्लेट

कुछ समय पूर्व इन स्लेटो की मांग बहुत ही ज्यादा थी। घरों की छत और आंगन के लिए लोग स्लेटो का उप्योग ही करते थे। खनियारा ग्राम पंचायत इसी नीले सोने के व्यापार से पैसे कमाती थी। उस समय इन खदानों में काम करने के लिए बाहरी राज्यों और नेपाल से भी लोग आते थे और अच्छा पैसा कमाते थे। लेकिन समय के साथ इसकी मांग कम होती गई और देश के कुछ कोनो तक ही सीमित हो गई। पर्यावरण संरक्षण और स्लेटों की मांग कम होने के कारण इन खदानों को बंद करना पड़ा। खनियारा पंचायत का वर्ष 2001 में विघटन हो गया जिसने इसे तीन पंचायतों में बांट दिया। इस विघटन से पहले यह एशिया की सबसे अमीर पंचायत होती थी और पंचायत की बचत ही 15 से 20 लाख होती थी।

खनियारा की स्लेट खानों मे काम करते सुरेंद्र नाम के मजदूर ने बताया कि पुराने समय मे विकसित किया गया उसका स्लेट बनाने का कौशल अब के समय में उसे पहले जैसी आय नहीं दिलाता। इस कम आय का कारण स्लेट की मांग कम होना है। पिछले 18 और 19 साल पहले इस काम में आय बहुत अच्छी था तब मेरे पिता ने मुझे यह कौशल सिखाया था।

राजीव कालिया जिला खनन अधिकारी कांगड़ा ने कहा कि विभाग की ओर से स्लेट खानों को कानूनी तौर पर चलाने का प्रयास किया जा रहा है। जहां करीब 25 हेक्टेयर चिंहित क्षेत्र में 15 की नीलामी की गई है जबकि 10 हेक्टेयर क्षेत्र की नीलामी की प्रक्रिया जारी है।

धौलाधार की पहाड़ियों में होता है हवाबाजी का खेल

मनीष गुप्ता

धौलाधार की खुबसूरत पहाड़ियां यूं तो प्राकृतिक सुंन्दरता के लिए जानी जाती है लेकिन बिलिंग घाटी में होने वाला हवाबाजी का साहसी खेल इन पहाड़ों में आकर्षण का मुख्य केंन्द्र बन चुका है। इन घाटियों के आसमान का रंग मानवीय परिंदो के कारण जगमगाता रहता है। यही वज़ह है कि धर्मशाला व कांगड़ा आने वाला हर व्यक्ति इन घाटियों में कम से कम एक बार उड़ान भरने की इच्छा रखता है।

बिलिंग घाटी जिला कांगड़ा के बैजनाथ उपमंडल के बीड़ गांव से चौदह किलोमीटर उपर की ओर धौलाधार की गोद में 2400मी की उंचाई पर स्थित है। इस धाटी में इटली के बाद विश्व का दूसरा बेहतरीन पैराग्ंलाइडिंग स्थल मौजूद है। यहां वर्ष 2015 में देश के पहले पैराग्लाइडिंग वर्ल्ड कप का आयोजन किया गया था। वर्ष 2003 में देश पहले प्री वल्ड कप का आयोजन किया गया, उसके बाद पांच बार यहां प्री वल्डकप का आयोजन किया जा चुका है। पैराग्लाइडिंग दो प्रकार से होती है। एक टेंडम व दूसरी सोलो। टेंडम में एक प्रशिक्षित पायलट किसी भी पैराग्लाइडिंग से अंजान व्यक्ति को अपने साथ उड़ा सकता है। जबकि सोलो पैराग्लाइडिंग में केवल अकेला ही पायलट ही उड़ता है। प्रदेश में अधिकांश पर्यटक लाईसेंस व अनुभव न होने के कारण केवल टेंडम पैराग्लाइडिंग ही करते| यह पूरी तरह से हवा पर निर्भर रहने वाला खेल है। बिलिंग घाटी में साहस के इस खेल की शुरुआत

पैराग्लाइडिंग करते हुए पर्यटक

वर्ष 1992 में की गई थी। एक विदेशी पायलट ब्रूस मिल्स ने यहां पहली उड़ान भरी और कई स्थानीय युवाओं को इसका प्रशिक्षण दिया। उस समय से लेकर आजतक यह धौलाधार की ओर सैलानियों को आकर्षित करने का मुख्य ज़रिया बन चुका है।

पॉलिथीन हटाओ पर्यावरण बचाओ

प्रेषिता ठाकुर

भारत में हर साल लगभग 62 मिलियन टन कचरा उत्पन्न होता है |स्वच्छ भारत मिशन के लक्ष्य को पूरा करने के लिए हमें तत्काल कचरे के निस्तारण की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में हिमाचल प्रदेश में 'पॉलीथिन हटाओ पर्यावरण बचाओ' अभियान सफलतापूर्वक 12 से 20 अप्रैल तक सभी जिलों में चलाया गया ।इस साल अभियान का उद्घाटन 12 अप्रैल को शिमला में राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने किया। यह अभियान पिछले साल 27 मई 2018 को राज्यव्यापी सप्ताह भर के अभियान के रूप में शुरू किया गया था । प्रदेश में 2009 से प्लास्टिक के थैले पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाया गया है परंतु प्लास्टिक पैकेजिंग इत्यादि के लिए अभी भी प्रयोग में लाया जाता है| प्लास्टिक के कचरे से निपटना वैज्ञानिकों के लिए भी कड़ी चुनौती बन गया है, यही कारण है कि कचरे से निपटने के लिए जागरूकता अत्यधिक आवश्यक है। बर्न विश्वविद्यालय द्वारा किए गए एक शोध से पता चला था कि माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण स्विट्जरलैंड भर में मिट्टी को दूषित करता है, यहां तक कि दूरदराज के पहाड़ों को भी। स्विट्जरलैंड में उपयोग किए जाने वाले लगभग 100% प्लास्टिक का या तो पुनर्नवीनीकरण किया जाता है या नष्ट किया जाता है। स्विट्जरलैंड जैसे विकसित देश भी इसका सामना कर रहे हैं हिमाचल भी खतरनाक प्रदूषण की समस्याओं में भारी वृद्धि के साथ एक संकट का सामना कर रहा है, भले ही हम इसे अधिक स्वच्छ राज्य मानते है।

प्लास्टिक हमारे कचरे के प्रमुख घटकों में से एक है| यही वजह है कि इसे खत्म करने के बारे में सोचना महत्वपूर्ण है। हिमाचल प्रदेश राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, नगर निगम धर्मशाला में वर्ष 2017-18 में उत्पन्न प्लास्टिक कचरा 2 टन था जबकि एकत्रित कचरा केवल 4 क्विंटल था । इसका मतलब है कि हमें अभी लंबा रास्ता तय करना है । हम स्वीडन देश से सीख सकते हैं जिसने अपने कचरे को संभालने के तरीके में क्रांति ला दी है। स्वीडन के घरेलू कचरे का एक प्रतिशत से भी कम लैंडफिल डंप में जाता है, बाकी का अलग-अलग तरीकों से पुनर्नवीनीकरण किया जाता है। यह अविश्वसनीय लगता है, लेकिन स्वीडन के पास इतना कम कचरा बचा है कि वह वास्तव में अन्य देशों से कचरा मांग रहा है ताकि वह अपने रीसाइक्लिंग प्लांट को चालू रख सके।

पॉलिथीन के उन्मूलन के लिए सरकार की योजनाओं के अलावा, नागरिकों का भी यह कर्तव्य है कि वे इसके नुकसानों को जानें और एक स्थायी मानसिकता का अभ्यास करें ताकि हम हिमाचल प्रदेश को देवताओं की भूमि के रूप में बचाए जारी रख सकें।

देवभूमि हिमाचल का अलौकिक एहसास

सैयद आदि शाह

हिमाचल प्रदेश अपनी संस्कृति की वजह से जाना जाता है और इसे यह नाम संस्कृत के विद्वान दिवाकर दत्त शर्मा ने दिया था। हिमाचल के लोग इसकी भिन्न भिन्न विशेषताओं को इसकी पहचान मानते है जैसे कि यहाँ की भाषाएँ, भौगोलिक स्थिति, पहाड़ी क्षेत्र, खान-पान, नृत्य, पहनावा, रहन-सहन और संस्कृति आदि। यहाँ पर कुछ दूरी तय करने के बाद ही भाषा में परिवर्तन होना शुरू हो जाता है। यहाँ पर प्रत्येक जिले की अपनी अपनी विशेषताएं हैं। ऐसे ही कुछ स्थानीय लोगों ने अपने अपने क्षेत्रों के बारे में तथा खुद के हिमाचली होने के संदर्भ में अपनी बातें रखी। अमित आयु का कहना है कि हिमाचली संस्कृति की यह अच्छी बात है कि प्राचीन काल से ही देवताओं को स्त्रोतों से जोड़ा गया है जैसे जल, वायु और धरती आदि , जिससे लोग देवताओं की पूजा के साथ साथ अपने स्त्रोतों की भी संभाल रखते हैं। इसी वजह से हमारे जल स्त्रोत भी अभी तक अच्छी स्थिति में बने हुए हैं। विवेक सोनी का कहना है कि पहले उन्हें लगता था कि वह गलत जगह पैदा हो गया हैं जिसकी वजह से पढ़ाई के लिए उन्हें बाहरी क्षेत्रों में जाना पड़ा। परन्तु बाहर जा कर ही मुझे इसकी असली सुंन्दरता का पता चला। यहाँ की वायु भी बहुत स्वच्छ है लेकिन भारत के कई शहरों की वायु इतनी प्रदूषित हो चुकी है कि वहाँ सांस तक लेना भी मुश्किल है। वहीं हिमाचल प्रदेश क केन्द्रीय विशवविद्यालय की छात्रा ऋतु शर्मा जो कि पालमपुर निवासी है, उनका कहना है कि " हिमाचल प्रदेश जिसे देवभूमि कहते हैं वो वीरभूमी के नाम से भी जानी जाती है । इस वीरभूमि मे पैदा होना मेरे लिए गर्व की बात है। जब भी कहीं हिमाचल से बाहर जाती हूं और वहां कोई अंजान अगर हिमचली मे बात करता है तो बहुत अच्छा सा एहसास होता है मानो जैसे कोई अपना मिल गया हो । जब बाहर के दोस्तों के बीच बैठती हूं और वो मुझे पहाड़न बुला देते हैं तो दिल को अलग सी खुशी मिलती है। मेरे लिए हिमाचली होना कुछ ऐसा ही है।" विशवविद्यालय की एक और छात्रा वंशिता वसिष्ठ निवासी चंबा ने अपने हिमाचली होने के संदर्भ मे कुछ ऐसी बात रखी " मेरे लिए हिमाचली होना किसी आशीर्वाद से कम नही है । जब मुझे कोई हिमाचली बुलाता है तो मुझे यहां की ठंडी हवाओं का, यहां की वनस्पति का, यहां के सामंजस्य और यहां के पूरे वातावरण का एहसास हो जाता है जो कि किसी जन्नत से कम नही है । मै खुशकिस्मत हूं कि मै हिमाचल से हूं अथवा मुझे हिमाचल मे रहने का आशीर्वाद मिला है तो हिमाचली होने के नाते मेरा कर्तव्य है मै यहां की सुंदर प्रकृति का खयाल रखूं और किसी को हिमाचल कि सुंदरता साथ छेड़ - छाड़ ना करने दूं। हिमाचली होना एक खुशी है ।"

वहीं अंकिता ठाकुर का कहना है की " हिमाचल प्रदेश मेरे लिए एक गर्व है | हालांकि मै अभी तक हिमाचल की विविधता को जान नहीं पाई हूँ , पर मेरे लिए इसकी विभिन्नता को जानना पूरे विश्व को जानने बराबर होगा। मैं हिमाचल प्रदेश की मूल निवासी यहाँ काफ़ी सुरक्षित महसूस करती हूँ।" हिमाचल प्रदेश अपने अंदर काफी विशेषताएं लिए बैठा है। आइए इन विशेषताओं से आपको रूबरू कराते हैं। हिमाचल की इकॉनमी पूरे देश की तीसरी सबसे तेजी से बढ़ती इकॉनमी है जो की तीन चीज़ों पर निर्भर करती है- 1 बिजली 2. पर्यटन और 3. खेती/बागवानी। वहीं पॉलिथीन और तंबाकू पर बैन लगाने के बाद उसे सही तरीके से लागू करने में हिमाचल प्रदेश सबसे आगे है। खासकर पॉलिथीन के मामले में तो पूरा देश हिमाचल से सीख सकता है। व्यवस्था के साथ इस बात का श्रेय यहां के निवासियों को भी जाता है। हिमाचल की 90 फीसदी आबादी गांवों और छोटे कस्बों में रहती है। प्रकृति की गोद में रहने का सुख हिमाचल से बढ़कर कहीं और नहीं मिल सकता। कागजों के मुताबिक प्रदेश के हर घर में टॉइलट है। वैसे बहुत कम देखने को मिलता है कि लोग खुले में शौच के लिए जाते हों। साल 2005 में आई ट्रांसपैरंसी इंटरनैशनल की रिपोर्ट के मुताबिक हिमाचल केरल के बाद देश का दूसरा सबसे कम करप्ट राज्य है वहीं प्रदेश की कुल आबादी 6,856,509 है|

युवा कंधो ने उठाया हिमालय की सफाई का ज़िम्मा

अजय कुमार

घर, कमरे और अपनी गली की सफाई तो हम सभी करते हैं लेकिन कई वर्षों से हिमालय की चोटियां हमारे द्वारा फैलाई गंदगी का बोझ ढो रही हैं। हिमालय की इन चोटयों को साफ करने

ट्रक में कचरा लोड करते वालंटियर

का बीड़ा उठाया है हीलिंग हिमालया नामक संस्था ने | इस संस्था का पहाड़ों पर प्लास्टिक, रैपर, थर्मोकोल आदि को साफ करने का काम 5 साल से जारी है। यह संस्था हर साल लगभग 100 टन कचरा हिमालय की गोद से हटाते हैं, यानी अभी तक संस्था ने लगभग 500 टन कचरा हटाती है। इसके संस्थापक है प्रदीप सांगवान| सांगवान मूल रूप से हरियाणा से हैं और 2014 से हिमालय की सफाई कर रहे हैं | 2014 से अब तक संगठन ने खीर गंगा, परसर झील, शिमला, बिजली महादेव, मनाली, चंद्रताल झील, श्रीखंड महादेव, किन्नौर और कई और स्थानों के लिए ट्रेकिंग अभियान के साथ बहुत सारे सफाई अभियान चलाए। बॉलीवुड के प्रसिद्ध अभिनेताओं जैसे दीया मिर्ज़ा, रणदीप हुड्डा, वरुण धवन ने इस संस्था के साथ काम किया है|

एकत्रित होने के बाद इस कचरे के साथ क्या होता है? "इसमें से अधिकांश, लगभग 60-70%, पुनर्नवीनीकरण प्लास्टिक है तो, हम इसे पास के रीसाइक्लिंग प्लांट को देते हैं। एकल-उपयोग प्लास्टिक बिजली संयंत्रों में जाता है। हिमाचल प्रदेश में ऐसे दो प्लांट हैं। इसलिए हम जो कुछ भी इकट्ठा करते हैं उसका निपटान कर सकते हैं। ग्लास सबसे खराब है। ग्लास को रीसायकल करना मुश्किल है। हम टूटे हुए ग्लास को नहीं ला सकते क्योंकि इससे किसी को चोट लग सकती है, "सांगवान कहते हैं।

हालांकि, सांगवान कहते हैं कि दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए पहाड़ों पर जाने के लिए एक रास्ते पर जाने की जरूरत नहीं है, लेकिन किसी की जीवन शैली में छोटे लेकिन सार्थक को बदलावों शामिल करके ऐसा कर सकते हैं। "यह आपकी आदतों को बदलने के बारे में है। एक कपड़े की थैली खरीदें और इसे फिर से उपयोग करें। अपने शहर, गांव, पहाड़ों और महासागरों के प्रति अपनेपन की भावना रखें|" प्रदीप इसी धारना को आगे ले जाना चाहते हैं की पहाड़ो की शुद्ध हवा और हरयाली बची रहे ताकि यह हमे आकर्षित कर सके |

अतिथि लेख...

खोना और पाना

वो हंसी और खिलखिलाहट जो
भूल आए है हम कहीं
वो खुशी और खुशमिजाजी जो खो
आए है हम कहीं
वो प्यार वो दोस्ती जो छोड़ आए है
हम कहीं
छूटी है पर खोई नहीं है
दफन है रौनकें अब किसी कोने में
चलो वो हंसी ,खुशी और
खिलखिलाहट वापिस लाई जाए
दुनिया को फिर से जलाया जाए
अब दुनिया के लिए नहीं खुद के
लिए मुस्कुराया जाए।

- विपाशा बिष्ट

लेखों के लिए आमंत्रण

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित समाचारपत्रों - संवाद (हिन्दी) एवं voice (अंग्रज़ी) में यदि आप कोई स्वरचित समसामयिक लेख, समाचार, कहानी, कविता, व्यंग्य अथवा अन्य किसी विधा की रचना प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो उसे voicesamvaad@gmail.com पर भेज सकते हैं। लेखों की शब्द-सीमा ३०० है, हालाँकि ३०० से अधिक शब्दों वाली रचनाएँ भी संपादकीय निर्णयानुसार प्रकाशन हेतु स्वीकृत की जा सकती हैं। आपके द्वारा भेजी गयी रचनाओं के प्रकाशन के संदर्भ में अंतिम निर्णय संपादक मण्डल का होगा।

|संवाद टीम|

शालिनी ठाकुर, अजय कुमार, उमंग अरोड़ा, मनीष गुप्ता, शुभम , प्रेषिता ठाकुर, स्वाति ठाकुर, अनुज कुमार पाण्डेय, सैयद आदि शाह अशरफ

पृष्ठ सज्जा
अजय कुमार
शालिनी ठाकुर

संपादक मण्डल
शालिनी ठाकुर
अजय कुमार

संवाद दाता
शालिनी ठाकुर
अजय कुमार
उमंग अरोड़ा
मनीष गुप्ता
शुभम
प्रेषिता ठाकुर
स्वाति ठाकुर
अनुज कुमार पाण्डेय
सैयद आदि शाह अशरफ